दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 13.09.2022

प्रकाशनार्थ

दिनांक 13 सितम्बर 2022 गोरखपुर। **युगपुरूष ब्रहंमलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 53वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रहंमलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 08वीं पुण्यतिथि के अवसर पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन** किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने महंतद्वय को पुष्पांजलि अर्पित की।

उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. रजवंत राव, प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कृतज्ञता मानव जाति की थाती होती है। मनुष्य के अतिरिक्त किसी भी अन्य प्राणि में यह गुण नही होता है। उत्कृष्टता एवं विकास एक सतत प्रक्रिया है जहाँ लक्ष्य सर्वोत्म होता है, वहाँ विकास पूर्णता को प्राप्त करता है। महन्तद्वय ने समाज के प्रतिगामी तत्व छुआ–छूत व अस्पृश्यता की पहचान की तथा अशिक्ष के रूप में समाज के पिछड़ेपन को पहचाना एवम इसे दूर करने के लिए समाज को एकता के सूत्र में पिरोते हुए राष्ट्रीय उत्थान को लक्ष्य बनाया जिसके निमित्त यूरोपिय विचार तन्त्र के विपरित भारतीय विचारतन्त्र एवं संस्कृति को स्थापित करने के उददेश्य से सन् 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की जिससे भारतीयों को बौद्धिक दासता से मुक्ति दिलाया जा सके। उन्होंने आगे कहा कि ब्रहमंलीन महंत दिग्विजयनाथ जी द्वारा लगाये गये वृक्ष को महंत अवेद्यनाथ जी ने पुष्पित एवं पल्लवित किया। हमें अपनी संस्कृति के साथ–साथ सृजनातमक्ता पर ध्यान देना मंहतद्वय के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. मायाशंकर सिहं ने कहा कि शिक्षा के उन्नयन में धर्म और समाज की रक्षा एवं राष्ट्र के उत्थान में गोरक्षनाथ पीठ एवं इसके संतो का विशेष योगदान है। महंत अवेद्यनाथ जी पूर्णतः सवेदनशील, समरस व्यक्तित्व के धनी एवं करूणानिधि थे। हम सभी महंत जी के भावना के अनुसार अपनी निष्ठा को बनाये रखते हुए अपने दायित्व को समझे और उसके प्रति अपनी कार्यसंस्कृति को विकसित करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि गोरक्षपीठ साधना, स्वाध्याय व योग का पीठ है। स्वधर्म का पालन ही असली पूजा है, जिसके प्रति हमे सदैव जागरूक रहना चाहिए। महंत अवेद्यनाथ जी राम मन्दिर आंदोलन की प्रभावी भूमिका में रहें है, जिनका समाज के उन्नयन व धर्म की रक्षा में विशेष योगदान रहा हैं। हम अपने स्वधर्म का पालन करते हुए ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण करेगें जिनकी सोच राष्ट्रवादी होगी। जिससे हमारे समाज की एकता व अखण्डता अक्षुण्ण रह सकती है।

कार्यक्रम की प्रस्ताविकी प्रो धीरेन्द्र सिंह ने रखा एवं संचालन डॉ. सत्यपाल सिंह ने किया। उक्त अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
मीडिया प्रभारी